पवित्रता की पराकाष्ठा से अहिंसा परमोधर्म की स्थापना

हीरों की तरह चमकते हुए चांद-तारे, लहराता असीम समुद्र, आकाश को छूती पर्वत मालायें, हरियाली से ओत-प्रोत वन-उपवन, बहती संगीतमय सरितायें तथा पंछियों के कलरव-गान, प्राकृतिक सौन्दर्य हैं। आध्यात्मिक सौन्दर्य में सूर्योदय से भी सुखद उजाला व रूहे गुलाबों से भी अच्छी खुशबू होती है। गोधूलि से भी अधिक शान्तिदायनी प्रेरणायें चरित्रवान लोगों के समीप आने से अनुभव होने लगती हैं। उनकी आध्यात्मिक आभा, आँखों से भी ज्यादा समझ को विश्राम देती है। रंग-रूप, बनावट-सजावट से ही सुकून नहीं मिलते बल्कि सत्कर्मो से दिव्यता झलकती ही रहती है। सच में ईमानदार लोगो को स्वीकारते हुए सभी थैंक्स दिया करते हैं। कठिनाइयों में भी कर्तव्य पथ पर डटे रहने से उनका आन्तिरक सौन्दर्य प्रस्फुटित होता ही जाता है। सत्त बहती सरिताओं की तरह उनकी सात्विक जीवनधारा वृति को पावन करती रहती है। त्यागी-तपस्वी-सेवाभावी व मृदुभाषी लोगों से गहन आत्मीयता का अनुभव होता है। रुहानी शक्तियों को जागृत रखिये तो अनेकों को पवित्रता-सुख व शान्ति का उपहार मिलता ही रहेगा। आप की पावन वृति -दृष्टि-कृति को इतिहास अवश्य याद करेगा।

पवित्रता की सचरित्रता से हर अंग में रुहानियत आती है। बुराई से हटकर सत्य में स्थित होने से इस लोक में रहते भी व्यक्ति अलौकिक मालूम पड़ता है। शक्ति वा सौन्दर्य सदाचरण से प्राप्त किये जाते हैं। पवित्रता सिर्फ ब्रहमचर्य नहीं पर हर बोल, संकल्प तथा कर्म, ब्रह्मचारी होने चाहिए। ऐसी आत्माओं के चेहरे से, सम्पर्क-सम्बन्ध में आने वालों को ब्रह्मा बाप समान रुहानियत का अनुभव होने लगता है। विकारों से मुक्ति पाते ही चोरी-हत्या-व्यभिचार जैसे कर्म असम्भव होते जाते हैं। मन में उठती विकृतियों का दमन करते रहना ही पवित्रता नहीं। स्वपन में भी पवित्रता हो तो रुहानियत दिखाई देगी। हितकारी वचन व कमलवत दृष्टि हो जाने पर विकृतियों के लिये न नजर उठती ना ही बुरी बातें कानो में समाती हैं। पग भी बुरी राहों पर नहीं ब□ते। यदि देवी-देवताओं की तरह आभामय बनना चाहते हैं तो कोशिश कर सदाचारी-ब्रहमाचारी बनिये। लोग आप को नाराज करे तो भी राजी रहिए। दुआयें भी देते और लेते रहिए तो परमात्म प्यार के पाव्र बनते जायेंगे।

महान आत्माओं की शिक्षाओं को प□ने-सुनने-सुनाने से भी अच्छा है आचरण में लाना। जिसका आचरण सबके लिए सदा ही कल्याणकारी होता वही सच्चा धर्म संस्थापक है। धर्म-संप्रदायों द्वारा वर्ग विशेष के लिए नयी व्यवस्थायें दी गयीं पर सभी के लिए सुपाच्य न होने के कारण उनका विभेद ही कलह-कलेष का कारण बना है। धर्मों की अति ग्लानि हो जाने पर नया सम्प्रदाय स्थापन करने के लिये परमात्मा का अवतरण नहीं होता है। वे विश्व मानवता के लिए अहिंसा परमोधर्म की स्थापना करते तो अन्य धर्म-सम्प्रदायों का खात्मा हो ही जाता है। उनकी मंगलमय शिक्षाओं को धारणाओं में लाते ही मनुष्यों में देवत्व झांकने लगता है। इसलिए ईश्वरीय कार्यो में साथी-सहयोगी बनना माना जन्म-जन्मान्तर के लिए वन्दनीय-पूजनीय बनना। अभी जो भगवान का हाथ और साथ बनाये रखते 21 जन्मों के लिये वह उन्हें मालामाल-खुशहाल बनाये रखते हैं।

काम-क्रोधादि विकारों को महा बैरी कहा गया है। क्रोध को जीतना मनुष्य अहिंसा समझते पर कामनाओं की पूर्ति न होने पर ही वह आता है। अर्थात् काम ही क्रोधादि विकारों की मूल जड़ है। कामी, मुँह काला कर आत्मा को पतन की ओर ले जाते हैं। लोभी भी मिलावट, जमाखोरी, चोरबाजारी जैसे निम्न कर्म करते हैं। तेरे-मेरे, भाई-भतीजावाद का दंगल, मोह ग्रस्त होने से ही होते हैं। अहंकारी, भला कैसे निर्विकारी बनेंगे? तन-मन-धन, वचन व कर्म ही नहीं वायुमण्डल-वाइब्रेशन से भी सद्गुणों की सुगंध आती रहे तो

सम्पूर्ण पवित्र कहा जायेगा। वाणी द्वारा किसी को दु:ख देते वा ठगते तो प्राणी हिंसा से भी बड़ा पाप करते हैं। किसी का धन अपना लेना या अपने धन से दु:खी करना भी हिंसा है। देखते-सुनते वा नजदीकी बनते ही कोई घबरा जाये तो भी हिंसा समझिये। धर्म, भाषा, क्षेत्र जाति-पाति भी तमोप्रधानता के प्रतीक है। लूट-खसूट कर धनवान का दिखावा करने वालों को कौन पवित्र कह सकता है? शाकाहारी घर में जन्म लेने पर भी समझ से सात्विकता अपनायेंगे तो संयमशील ठहरे। विकार -बुराइयों के मन में हिलोरे लेते रहने पर, किन्हीं कारणों से दमन करने वालों को अहिंसक नहीं कहा जा सकता। समझ के साथ इनका समन ही आत्मा को सम्पूर्ण अहिंसक बनाता है।

अंर्तमन में झांकिये कि बुराइयों को जगाने वाली कमजोरियां कहाँ छिपी हैं? वशीभूत करने वाली विकारी प्रेरणायें कब आती हैं? दैहिक मोह आत्मा में गठान पैदा करता जबकि आत्म जागृति से ही शान्ति स्वधर्म की स्थापना होगी। तेरे-मेरे की भावधारा मिटाने पर ही विश्व बन्धुत्व कायम होगा। वैश्विक भाईचारे के सिद्वान्तों पर चलने को ही धर्मों की सत्य धारणा कहा जाता है। ऊँच -नीच, राग-द्वेष के कारण सभी व्याकुल हैं। विकृतियों से हम ही बैचेन नहीं होते पर सम्बन्ध-सम्पर्क वालों की भी सुख- शान्ति छिन जाती जिससे वायुमण्ड़ल प्रदूषित होने लगता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, आलस्य भय व निन्दा रूपी रावण के सिरों को काटते ही जीवन में निर्मलता के साथ शीतलता भी आती जायेगी। मैत्री भाव बनाये रखने से करूणामयी ज्ञान गंगा बहती रहने कारण चित शुद्ध होता जायेगा। विकारों के अंश-वंश भी पतझड़ के पत्तों की तरह झड़ते रहेंगे। निर्दोष मन, आत्मा को बन्धन विहीन कर जागती ज्योत बना देगा। तभी पावन बन परिर्वतनशील पदार्थों व देह की दुनियां से निरासक्त हो जीवन मुक्ति के अधिकारी बनेंगे।

परम सत्य परमात्मा के सानिध्य से परमानन्द का अनुभव करते रहना ही पवित्र वा अहिंसक बनना है। ऐसी विश्व हितकारी आत्माओं से किसी को कोई हानि नहीं होती है। विकारों को पालते रहने से ही हम दूसरों की हानि वा हिंसा करते है। इन्हीं के कारण अंग-प्रत्यंगों द्वारा दूसरों की सुख-शान्ति भंग होती है। विकार जागृत होते रहें और उनका दमन करते रहें तो विजयी नहीं,योद्धा कहलायेंगे। ब्रह्मा-सरस्वती की तरह अन्तर्तप द्वारा निर्विकारिता नहीं अपनायेंगे तो उनके साथ सतयुग में कैसे आयेंगे? अब से सम्पूर्ण निर्मलता द्वारा नयी सृष्टि के निर्माता बनिये। विकारों को अभी वश में नहीं करेंगे तो महाविनाश के समय वे ही सिर पर सवार होंगे। उस समय भले दबाते रहो, पर छुटकारा नहीं प्राप्त कर सकेंगे। अर्थात सजा खाने से मुक्ति-जीवनमुक्ति के पूर्ण अधिकारी नहीं बन सकेंगे। सच्चा अहिंसक वह है जो बुराइयों को आरम्भ ही न होने दे। चित्त पर मलिनता की छाप ही न पड़े। किसी में भी आसक्ति-विरक्ति नहीं जागे अन्यथा विकारों को आने का अवसर मिलता ही रहेगा। इनसे वशीभूत नहीं होते तो किसी पर अहसान नहीं करते बल्कि खुद ही व्याकुलता से बचते हैं। इसलिए अन्तरात्मा की आवाज सुन, सम्पूर्ण पवित्रता द्वारा अहिंसा परमोधर्म वाली दैवी संस्कृति की स्थापना में सहयोगी बनिये। तभी देवी-देवताओं की तरह सर्व अलंकारों से समलंकृत हो शन्ति स्वधर्म में स्थित रहते हुये गायन-पूजन योग्य सुखदाता बन पायेंगे। कहा भी तो गया है " पवित्रता ही सुख शान्ति की जननी तो सम्पूर्ण अहिंसा ही उसकी धरणी है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com